सूरदास-बाललीला के पद-हिंदी-रचना,बी०ए०पार्ट-२, डॉ०मनोज कुमार सिंह, सह-आचार्य,हिंदी विभाग, राजा सिंह महाविद्यालय, सिवान।

सिखवति चलन जसोदा मैया ।

अरबराइ कर पानि गहावत, डगमगाइ धरनी धरै पैया ॥

कबहुँक सुंदर बदन बिलोकति, उर आनँद भरि लेति बलैया ।

कबहुँक कुल देवता मनावति, चिरजीवहु मेरौ कुँवर कन्हैया ॥

कबहुँक बल कौं टेरि बुलावति, इहिं आँगन खेलौ दोउ भैया ।

सूरदास स्वामी की लीला, अति प्रताप बिलसत नँदरैया ।।३।।

प्रसंग:-प्रस्तुत वात्सल्य रस से सराबोर पद भक्तिकाल के सगुन भक्तिशाखा के कृष्णभक्ति परंपरा के प्रसिद्ध कवि सूरदास द्वारा रचित है। इस पद में बालक कृष्ण की अद्भुत छटा का चित्रण किया गया है। इस पद में मां यशोदा कृष्ण को चलना सीखा रही हैं ।

भावार्थ :-- माता यशोदा (श्याम को) चलना सिखा रही हैं । जब वे लड़खड़ाने लगते हैं,तब उसके हाथों में अपना हाथ पकड़ा देती हैं, डगमगाते चरण वे पृथ्वी पर रखते हैं । कभी उनका सुन्दर मुख देखकर माता का हृदय आनन्द से पूर्ण हो जाता है।वे बलैया लेने लगती हैं । कभी कुल-देवता का गुहार करने लगती हैं कि `मेरा कुँवर कन्हाई चिरजीवी हो ।' कभी पुकार कर बलराम को बुलाती हैं (और कहती हैं-) `दोनों भाई इसी आँगन में मेरे सामने खेलो । सूरदास जी कहते हैं कि मेरे स्वामी की यह लीला है कि श्रीनन्दराय जी का प्रताप और वैभव अत्यन्त बढ़ गया है ।

विशेषः-इस पद की भाषा ब्रजभाषा है और इसमें अनुप्रास अलंकार की अद्भुत छटा विखेरी गई है।

प्रात समय दधि मथति जसोदा,

अति सुख कमल-नयन-गुन गावति ।

अतिहिं मधुर गति, कंठ सुघर अति,

नंद-सुवन चित हितहि करावति ॥

नील बसन तनु, सजल जलद मनु,

दामिनि बिवि भुज-दंड चलावति ।

चंद्र-बदन लट लटकि छबीली,

मनहुँ अमृत रस ब्यालि चुरावति ॥

गोरस मथत नाद इक उपजत,

किंकिनि-धुनि सनि स्रवन रमावति ।

सूर स्याम अँचरा धरि ठाढ़े,

काम कसौटी कसि दिखरावति ॥४।।

प्रसंग-प्रस्तुत पद में सूरदास ने गृहस्थ जीवन जी रही एक मां के रूप में यशोदा का मनोहारी चित्र अभिव्यक्त किया है।

भावार्थ :-- प्रातःकाल यशोदा जी दही मथते समय अत्यन्त आनन्द से अपने कमल लोचन कुमार(कृष्ण) के गुण गा रही हैं । बड़े सुन्दर कण्ठ से अत्यन्त मधुर लय में श्रीनन्दनन्दन के प्रति प्रेमपूर्वक मन लगाये हुए गा रही हैं । यशोदा नीली साड़ी पहने हुए है। उनके शरीर पर नीली साड़ी ऐसी लगती है मानो पानी भरे मेघ हों। बिजली के समान दोनों भुजाओं को वे हिला रही हैं ।

उनके चंद्रमुख पर सुन्दर अलकें ऐसी लटकी हैं मानो सर्पिणियाँ अमृतरस की चोरी कर रही हों । दही मथते समय (मथनी का) एक नाद(ध्वनि) गुंजित हो रहा है और उसके धुन में करधनी की ध्वनि सुनती हुई वे अपने कानों को आनन्द दे रही हैं (उस नाद से स्वर मिलाकर गा रही हैं)। सूरदास जी कहते है कि श्यामसुन्दर उनका ऑचल पकड़कर खड़े हैं, मानो कामदेव को कसौटी पर कस कर दिखला रहे हैं । (कामदेव क्या इतना सुन्दर है? यह अपनी शोभा से सूचित करते हुए काम के सौन्दर्य की तुच्छता स्पष्ट कर रहे हैं ।)

विशेष:- ब्रजभाषा में लिखे गए इस पद में अनुप्रास अलंकार की अनुपम छटा के साथ "नील वसन तनु,सजल जलद मनु,

दामिनि बिचि भुज-दंड चलवाति।" और

"चंद्र-बदन लट लटकि छबीली,

मनहुँ अमृतरस ब्यालि चुरावति।"

में "मनु" के कारण उत्प्रेक्षा अलंकार का सुंदर उपयोग।

रस-वात्सल्य और श्रृंगार

गुण-माधुर्य